1 वर्ण विचारः

संस्कृत भाषा—संस्कृत पूर्णतया "संस्कार की हुई, परिमार्जित, शुद्ध, नियमबद्ध भाषा है। संस्कृत आर्यों की तथा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत भाषा को शुद्ध रूप में लिखने के व बोलने के लिए संस्कृत व्याकरण ज्ञान अति आवश्यक है। अतः व्याकरण का आरंभ संस्कृत के वर्णों के ज्ञान से शुरू होता है।

वर्णः

उस मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके टुकड़े न हो सकें, जैसे—क् ख् ग् घ् आदि। इनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। इन्हें अक्षर भी कहते हैं। अतः वर्ण या अक्षर भाषा की मूल ध्वनियों को कहते हैं, जैसे—'घटः' पद में घ् अ ट् अ और : (विसर्ग) ये मूल ध्वनियाँ हैं, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। इसी प्रकार अन्य पद भी समझिए, जैसे—

रामः — र् + आ + म् + अ + : मोहन : — म् + ओ + ह् + अ + न् + अ + :

वर्णमालाः— वर्णानां समूहः एव वर्णमाला भवति। (वर्णों का समूह ही वर्णमाला होता है ।)

वर्ण के भेद

संस्कृत में 48 वर्णों का प्रयोग होता है । ये मुख्य रूप से तीन भागों में विभक्त हैं—1. स्वर 2. व्यञ्जन 3. अयोगवाह ।

1. स्वराः (स्वर)

संस्कृत में 13 स्वर हैं । स्वरों का उच्चारण स्वतन्त्र रूप से होता है । अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण कराने के लिए अन्य किसी वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वरों की संख्या 13 है : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ।

स्वरों का वर्गीकरण—उच्चारण काल अथवा मात्रा के आधार पर स्वर निम्न तीन प्रकार के माने गये हैं—

(i) ह्रस्व स्वर—अ, इ, उ, ऋ, ऌ
ये पाँच होते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। इनके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है। अतः इसे एक मात्रिक कहा जाता है।

(ii) दीर्घ स्वर—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ
ये आठ होते हैं। इनके उच्चारण में दो मात्रा का अर्थात ह्र से दुगना समय लगता है। ए, ओ, ऐ, औ ये भी दीर्घ स्वर हैं। ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं— अ + इ = ए। अ + ए = ऐ। अ + उ = ओ। अ + ओ = औ

(iii) प्लुत स्वर— अ ३, इ ३, उ ३, ऋ ३, ऌ ३, ए ३, ऐ ३, ओ ३, औ ३, (ये नौ प्लुत स्वर हैं।) इनके उच्चारण में दोमात्रा से अधिक समय लगता है । अतः इन्हें त्रिमात्रिक भी कहते हैं। जब हम किसी को दूर से बुलाते हैं तब प्लुत स्वर का प्रयोग होता है ।) यथा-ओ३म् इति इनमें लगा ३ का अंक तीन मात्राओं का सूचक होता है।

नोट—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत स्वरों की कुल संख्या 22 है, जिनमें ह्रस्व 5, दीर्घ 8 और प्लुत 9 हैं।

2. व्यञ्जनानि (व्यञ्जन)

संस्कृत में (33) तैंतीस व्यञ्जन हैं । व्यञ्जनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है । व्यञ्जन उच्चारण में अर्ध मात्रा का समय लगता है, जिस व्यञ्जन में स्वर का योग नहीं होता उसमें हलन्त का चिह्न लगता है ।

(i) स्पर्श वर्ण— क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, = क वर्गः =5 च्, छ्, ज्, झ्, ञ् = च वर्गः =5
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, = ट वर्गः =5 त्, थ्, द्, ध्, न्, = त वर्गः =5
प्, फ्, ब्, भ्, म्, = प वर्गः =5

ये सभी 25 व्यञ्जन स्पर्श वर्ण कहलाते हैं।

(ii) अन्तःस्थः—य्, र्, ल्, व् = 4 ये चार अन्तःस्थ वर्ण कहलाते हैं। इनके उच्चारण करने में भीतर से कुछ अधिक बल से साँस लानी पड़ती है।

(iii) ऊष्मः—श्, ष्, स्, ह् = 4 ये चार ऊष्म वर्ण कहलाते हैं।

संयुक्त-व्यञ्जनानि—संस्कृत में संयुक्त व्यञ्जन हैं—क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्, द्य्, प्र्, द्व्, द्ध्, स्र इत्यादि। ये संयुक्त होने के कारण वर्ण नहीं कहे जाते।
संयुक्त वर्ण—दो व्यञ्जन मिलकर संयुक्त वर्ण बनाते हैं—

क् + ष् = क्ष्	क्ष् + अ = क्ष	प् + र् = प्र्	प्र् + अ = प्र
द् + य् = द्य्	द्य् + अ = द्य	द् + व् = द्व्	द्व् + अ = द्व
त् + र् = त्र्	त्र् + अ = त्र	द् + ध् = द्ध्	द्ध् + अ = द्ध
ज् + ञ् = ज्ञ्	ज्ञ् + अ = ज्ञ	श् + र् = श्र्	श्र् + अ = श्र
स् + र् = स	स् + अ = स्र		

नोट—'र्' अन्य वर्णों के साथ 3 प्रकार से संयुक्त होता है ।
1. '्र' अर्थात् दूसरे वर्ण के बाद उच्चरित होने पर, जैसे—प्र, त्र, स्र, क्र आदि ।
2. '‸' ट वर्ग के साथ 'र्' का संयोग होने पर, जैसे— ट्र, ड्र, ढ्र आदि ।
3. 'र्' जिस वर्ण के साथ संयुक्त होता है उससे पहले उच्चरित होता है । जैसे— शर्म, गर्म, कर्म, सर्प आदि ।

3. अयोगवाहः (अयोगवाह)

जिस वर्ण का उच्चारण स्वर के पश्चात् होता है । वह अयोगवाह कहा जाता है ।

अनुस्वारः अं (ं)	विसर्गः अः (:)
(i) स्वर के ऊपर जो बिन्दु लगाया जाता है उसे अनुस्वार कहते हैं । (ii) स्वर के परे न् अथवा म् के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होता है । यथा— इयम् + गच्छति = इयं गच्छति, यशान् + सि = यशांसि	(i) स्वर के बाद या आगे आने वाले दो बिन्दुओं को विसर्ग कहा जाता है । विसर्ग का उच्चारण अर्ध 'ह्' की तरह होता है । (ii) 'र्' और 'स्' के स्थान पर भी विसर्ग होता है । यथा—रामः, हरिः भानुः इत्यादि ।

वर्ण संयोजनम्—जब वर्णों का मेल होता है तब वर्ण संयोजन होता है । यथा– प् + अ + त् + र् + अ + म् = पत्रम् ।

वर्ण विन्यासः—जब पदों के वर्णों को अलग-अलग करके लिखा जाता है उसे वर्ण विन्यास कहा जाता है । यथा—वृक्षात् पदे व् + ऋ + क् + ष् + आ + त् वर्णाः सन्ति ।

वाक्यः—पदानां समूहः एव वाक्यं भवति । (पदों का समूह ही वाक्य होता है ।)

पदः—वर्णों के संयोग से (मिलने से) पद का निर्माण होता है । जैसे 'रामः'

मात्राः

स्वराणां मात्रारूपेण प्रयोगः (स्वरों का मात्रा के रूप में प्रयोग)

स्वरः	मात्राः	वर्णक्रमः	शब्दः	स्वरः	मात्राः	वर्णक्रमः	शब्दः
अ	'अ' की मात्रा नहीं होती	प्+अ+व्+अ+न्+अ	= पवन	लृ	ॢ	भ् + लृ	= भ्लृ
		ग्+अ+र्+अ+म्+अ	= गरम	ए	े	क् + ए + ल् + आ	= केला
आ	ा	प् + आ + ल् + आ	= पाला	ऐ	ै	प् + ऐ + र् + अ	= पैर
इ	ि	ग् + इ + र् + इ	= गिरि	ओ	ो	ज् + ओ + र् + अ	= जोर
ई	ी	म् + ई + ठ् + ई	= मीठी	औ	ौ	ग् + औ + र् + अ	= गौर
उ	ु	प् + उ + र् + उ	= पुरु	अं	ं	म् + अं + ग् + अ + ल् + अ	= मंगल
ऊ	ू	च् + ऊ + ल् + आ	= चूला	अः	:	प् +र् + आ + त् +अः	= प्रातः
ॠ	ॄ	प् + इ + त् + र + ॠ + ण् + आ + म्	= पितॄणाम्	ऋ	ृ	ग् + ऋ + ह् + अ	= गृह

नोट—सभी व्यञ्जन वर्णों के लिपि चिह्नों में 'अ' स्वर रहता है, किन्तु जब यह नहीं रहता तो व्यञ्जन वर्ण में हलन्त का चिह्न लगाते हैं । जैसे— विद्या, चिह्न, गड्ढा आदि ।

स्मरणीय बिन्दवः

1. संस्कृत में 13 स्वर, 33 व्यञ्जन, 1 अनुस्वार, 1 विसर्ग कुल 48 वर्ण होते हैं । 2. विभिन्न ध्वनियों को ही वर्ण कहा जाता है । 3. ऋ, 'लृ' स्वर हैं, लृ का दीर्घ नहीं होता । 4. शुद्ध व्यञ्जन स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते । 5. स्वररहित व्यञ्जन के नीचे हलन्त का चिह्न

(्) लगता है । 6. दो स्वरों के मिलने से संयुक्त स्वर व दो वर्णों के मिलने से संयुक्त वर्ण बनते हैं । 7. अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (:) का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं होता । ये सदैव स्वरों के बाद लगते हैं । 8. वर्ण विन्यास करते समय विसर्ग को अन्तिम स्वर के बाद ही लिखते हैं । 9. "ह्रस्व स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय, दीर्घ स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय, प्लुत स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा का समय तथा स्वररहित वर्ण के उच्चारण में अर्द्ध मात्रा का समय लगता है । 10. ध्वनियों के संयोग से शब्द बनते हैं ।

वर्णोच्चारणस्थानानि

शब्द प्रयोग करते समय आन्तरिक वायु कण्ठ आदि स्थानों का स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है जिससे वर्णों की अभिव्यक्ति होती है । सभी वर्णों का उच्चारण मुख से होता है । जिसमें—कण्ठ, जिह्वा, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ एवं नासिका का प्रयोग होता है । ये सभी उच्चारण स्थान हैं । अतः हम कह सकते हैं कि—

''वर्णों का उच्चारण करते समय मुख के कण्ठ आदि भागों का प्रयोग होता है, जिह्वा मुख के जिस भाग से स्पर्श करती है या आन्तरिक वायु जिन स्थानों से टकराकर बाहर निकलती है उन्हें उच्चारण स्थान कहते हैं ।''

उच्चारण स्थानों का वर्गीकरण निम्न रूपों में किया जाता है—

(1) कण्ठ (2) तालु (3) मूर्धा (4) दन्त (5) ओष्ठ (6) नासिक (7) कण्ठतालु (8) कण्ठोष्ठ (9) दन्तोष्ठ (10) जिह्वामूल।

(1) कण्ठ – 'अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः अर्थात् अ, आ, क वर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), ह् और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है । कण्ठ से उच्चारण किये गये वर्ण 'कण्ठ्य' कहलाते हैं ।

(2) तालु –'इचुयशानां तालुः' अर्थात् इ, ई, च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य् और श् का उच्चारण स्थान तालु है । तालु से उच्चारित वर्ण 'तालव्य' कहलाते हैं। इन वर्णों का उच्चारण करने में जिह्वा तालु (दाँतों के मूल से थोड़ा ऊपर) का स्पर्श करती है ।

(3) मूर्धा – 'ऋटुरषाणां मूर्धा' अर्थात् ऋ, ॠ, ट वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र् और ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है । इस स्थान से उच्चारित वर्ण 'मूर्धन्य' कहे जाते हैं । इन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा मूर्धा (तालु से भी ऊपर गहरे गड्ढेनुमा भाग) का स्पर्श करती है । मूर्धा को कोमल तालु भी कहते हैं।

(4) दन्त –'लृतुलसानां दन्ताः' अर्थात् लृ, त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल् और स् का उच्चारण स्थान दन्त होता है । दन्त स्थान से उच्चारित वर्ण 'दन्त्य' कहलाते हैं । इन वर्णों का उच्चारण करने में जिह्वा दाँतों का स्पर्श करती है ।

(5) ओष्ठ –'उपूपध्मानीयानामोष्ठौ' अर्थात् उ, ऊ, प वर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) तथा उपध्मानीय (≍ प, ≍ फ) का उच्चारण स्थान ओष्ठ होते हैं । ये 'ओष्ठ्य' कहलाते हैं । इन वर्णों का उच्चारण करते समय दोनों ओष्ठ आपस में मिलते हैं । अतः इनका उच्चारण स्थान दोनों ओष्ठ हैं

(6) नासिका–'ञमङणनानां नासिका च', तथा 'नासिकाऽनुस्वारस्य' अर्थात् ञ्, म्, ङ्, ण्, न् का उच्चारण स्थान नासिका है । इस स्थान से उच्चारित वर्ण 'नासिक्य' कहलाते हैं । इन वर्णों के पूर्वोक्त अपने-अपने वर्ग के अनुसार कण्ठादि उच्चारण स्थान भी होते हैं । जैसे— क वर्ग के 'ङ्' का उच्चारण स्थान नासिका के अतिरिक्त कण्ठ भी होता है । इसी प्रकार च वर्ग के 'ञ्' का उच्चारण स्थान तालु और नासिका, ट वर्ग के 'ण्' का मूर्धा और नासिका, त वर्ग के 'न्' का दन्त और नासिका तथा प वर्ग के 'म्' का ओष्ठ और नासिका होता है। (iii) अनुस्वार (ं) का उच्चारण स्थान नासिका (नाक) होता है ।

(7) कण्ठतालु –'एदैतोः कण्ठतालु' अर्थात् एकार ए तथा ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठतालु होता है । अतः ये वर्ण 'कण्ठतालव्य' कहे जाते हैं । अ, इ के संयोग से ए तथा अ, ए के संयोग से ऐ बनता है । अतः ए तथा ऐ के उच्चारण में कण्ठ तथा तालु दोनों का सहयोग लिया जाता है ।

(8) कण्ठोष्ठ –'ओदौतोः कण्ठोष्ठम्' अर्थात् ओ तथा औ का उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ होता है। अ + उ = ओ तथा अ + ओ = औ बनते हैं । अतः इनके उच्चारण में कण्ठ तथा ओष्ठ दोनों का उपयोग किया जाता है । ये वर्ण 'कण्ठोष्ठ्य' कहलाते हैं।

(9) दन्तोष्ठ –'वकारस्य दन्तोष्ठम्' अर्थात् वकार का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ होता है । यह 'दन्तोष्ठ्य' कहलाता है । इसका उच्चारण करते समय ऊपर के दाँत नीचे के ओष्ठ से मिलते हैं। अतः दोनों के सहयोग से वकार का उच्चारण किया जाता है ।

(10) जिह्वामूल –'जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्' अर्थात् जिह्वामूलीय (≍ क ≍ ख) का उच्चारण स्थान जिह्वामूल होता है ।

अभ्यासः

प्रश्न 1. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु सम्यग् उत्तरस्य क्रमाक्षरः कोष्ठके लिखत–(निम्नलिखित प्रश्नों में सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए–)

1. वर्णमाला कथ्यते–
   (अ) वर्णानां समूहः (ब) स्वराणां समूहः
   (स) व्यञ्जनानां समूहः (द) अयोगवाह समूहः।

2. माहेश्वर सूत्राः कति सन्ति?
   (अ) त्रयोदश (ब) चतुर्दश
   (स) षोडष (द) पञ्चदश।

3. वर्णानां कति भेदाः सन्ति ?
(अ) चत्वारः (ब) पञ्च (स) त्रयः (द) अष्ट।

4. ..... व्यञ्जन अयोगवाहश्च वर्णानां त्रयः भेदाः सन्ति।
(अ) दीर्घ (ब) ह्रस्व (स) स्पर्श (द) स्वर।

5. संयुक्तः वर्णः किमस्ति ?
(अ) श्र (ब) द (स) अ (द) य।

उत्तराणि–
1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (द), 5. (अ)।

प्रश्न 2. अधोलिखितेषु व्यञ्जनेषु स्वराणाम् संयोगं कुरुत– (नीचे लिखे व्यञ्जनों में स्वरों को जोड़िए–)
1. प् + अ 2. न् + उ 3. ह् + ए 4. ध् + ऊ 5. झ् + ओ 6. ड् + इ 7. ब् + ए 8. ज् + ओ 9. न् + ऐ 10. थ् + आ 11. स् + ऋ 12. द् + ई 13. क् + औ 14. च् + आ 15. ख् + ऐ 16. ग् + ॠ 17. घ् + ई 18. छ् + उ 19. ष् +अ 20. भ् + इ ।

उत्तर– 1. प 2. नु 3. हे 4. धू 5. झो 6. डि 7. बे 8. जो 9. नै 10. था 11. सृ 12. दी 13. कौ 14. चा 15. खै 16. गृ 17. घी 18. छु 19. ष 20. भि ।

प्रश्न 3. अधोलिखितेषु वर्णेषु स्वरं पृथक् कृत्वा लिखत– (निम्नलिखित वर्णों में से स्वरों को पृथक करके लिखिए–)
1. शे 2. पि 3. ह 4. घा 5. सी 6. तु 7. गै 8. जू 9. बो 10. कौ 11. जृ 12. तॄ 13. भू 14. घो 15. गौ 16. पृ 17. कु 18. रौ 19. ते 20. नि।

उत्तर– 1. ए 2. इ 3. अ 4. आ 5. ई 6. उ 7. ऐ 8. ऊ 9. ओ 10. औ 11. ऋ 12. ॠ 13. ऊ 14. ओ 15. औ 16. ऋ 17. उ 18. औ 19. ए 20. इ ।

प्रश्न 4. अधोलिखितैः स्वर-व्यञ्जनैः संयुक्तवर्णं लिखत– (निम्नलिखित व्यञ्जनों से संयुक्त वर्ण लिखिए–)
1. द् + य् + अ 2. द् + व् + अ 3. ध् + य् + अ 4. ज् + ञ् + अ 5. त् + र् + अ 6. क् + ष् + अ 7. द् + ध् + अ 8. स् + र् + अ 9. म् + र् + अ 10. ड् + र् + अ 11. ट् + र् + अ 12. ग् + र् + अ 13. द् + र् + अ 14. श् + र् + अ 15. प् + र् + अ 16. क् + ऋ 17. भ् + र् + अ 18. ख् + र् + अ 19. घ् + ऋ 20. ज् + य् + अ।

उत्तर– 1. द्य 2. द्व 3. ध्य 4. ज्ञ 5. त्र 6. क्ष 7. द्ध 8. स्र 9. म्र 10. ड्र 11. ट्र 12. ग्र 13. द्र 14. श्र 15. प्र 16. कृ 17. भ्र 18. ख्र 19. घृ 20. ज्य ।

प्रश्न 5. अधोलिखितशब्दानाम् वर्ण विन्यासं कुरुत– (निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विन्यास कीजिए–)
1. चणकः 2. सूचिका 3. हरिणि 4. जननी 5. विडालः 6. गजः 7. हस्तः 8. देवी 9. माला 10. अजयः ।

उत्तर– 1. च् + अ + ण् + अ् + क् + अः, 2. स् + ऊ + च् + इ + क् + आ, 3. ह् + अ + र् + इ + ण् + इ, 4. ज् + अ + न् + अ + न् + ई, 5. व् + इ + ड् + आ + ल् + अः, 6. ग् + अ + ज् + अः, 7. ह् + अ + स् + त् + अः 8. द् + ए + व् + ई, 9. म् + आ + ल् + आ, 10. अ + ज् + अ + य् + अः ।

प्रश्न 6. अधोलिखितवर्णानां संयोजनं कुरुत–(निम्नलिखित वर्णों का संयोजन कीजिए–)

1. छ् + आ + त् + र् + अः	2. भ् + ओ + ज् + अ + न् + अ + म्	3. अ + न् + अ + ल् + आः
4. म् + उ + ख् + अ + म्	5. म् + अ + य् + ऊ + र् + औ	6. प् + उ + ष् + प् + अ
7. क् + उ + क् + क् + उ + र् + अः	8. ब् + इ + न् + आ + न् + ई	9. म् + ऋ + ग् + अः

10. क् + अ + ल् + इ + क् + आ

उत्तर– 1. छात्रः 2. भोजनम् 3. अनलः 4 मुखम् 5. मयूरौ 6. पुष्प 7. कुक्कुरः 8. बिनानी 9. मृगः 10. कलिका ।

❑❑

2 सन्धिः प्रकरणम्

सन्धिः शब्दस्य परिभाषाः– वर्णसन्धानं सन्धिः अर्थात् द्वयो वर्णयोः परस्परं यत् सन्धानं मेलनं वा भवति तत्सन्धिरिति कथ्यते । (जब दो वर्ण (स्वर या व्यञ्जन) अत्यधिक निकट होने के कारण मिलकर एक रूप धारण करते हैं तो उसे सन्धि कहते हैं ।)

पाणिनीय परिभाषाः– ''परः सन्निकर्षः संहिता'' अर्थात् वर्णानाम् अत्यधिक निकटता संहिता'' इति कथ्यते ।

सन्धि-विच्छेद – सन्धियुक्त पद में दो या दो से अधिक शब्दों को अलग करके रखना सन्धि-विच्छेद कहलाता है ।

जैसे– (i) हिम + आलयः = हिमालयः ।

स्पष्टीकरण – यहाँ म में अ स्थित है और इस अ के समीप आलयः शब्द का आ विद्यमान है । यहाँ अ + आ दोनों स्वर हैं । इन दोनों स्वरवर्णों को मिलाकर एक दीर्घ 'आ' हो गया और इन दोनों शब्दों हिम + आलयः को मिलाकर 'हिमालयः' यह सन्धियुक्त पद बन गया । यह स्वर-सन्धि का उदाहरण है ।

(ii) सत् + जनः = सज्जनः ।

स्पष्टीकरण – यहाँ 'सत्' के 'त्' व्यञ्जन वर्ण तथा इसके समीप 'जनः' के 'ज्' व्यंजन वर्ण में परस्पर मेल होने से 'त्' को 'ज्' में बदलने पर 'सज्जनः' सन्धियुक्त पद बन गया । यह व्यंजन सन्धि का उदाहरण है ।

(iii) मनस् + रथः = मनोरथः ।

स्पष्टीकरण – यहाँ 'मनस्' के 'स्' वर्ण को 'रथ' के 'र्' वर्ण के सामने होने के कारण विसर्ग (:) हो गया और 'मनः + रथः' रूप बन गया तथा 'मनः' के 'न' में स्थित विसर्ग को उ तथा मन के न के अ के साथ मिलकर 'ओ' होने पर 'मनोरथः' रूप बना । यह विसर्ग सन्धि का उदाहरण है ।

सन्धि के भेद – सन्धि के तीन प्रमुख भेद हैं–(1) स्वर या अच् सन्धि । (2) व्यंजन या हल् सन्धि । (3) विसर्ग सन्धि ।

(1) स्वर या अच् सन्धि

स्वर सन्ध्याः परिभाषाः – स्वराणां मेलनेन यः सन्धिः भवति सः स्वर-सन्धिः भवति । (स्वरों के मेल से जो सन्धि होती है वह स्वर-सन्धि होती है ।) अर्थात् जब दो अथवा दो से अधिक स्वरों के बीच परस्पर मेल होने से कुछ परिवर्तन होता है, तो उसे स्वर (अच्) सन्धि कहते हैं ।

स्वर सन्धि के भेद – स्वर सन्धि के प्रमुख भेद निम्नलिखित हैं–

(i) दीर्घ सन्धि, (ii) गुण सन्धि, (iii) वृद्धि सन्धि, (iv) यण् सन्धि, (v) अयादि सन्धि, (vi) पूर्वरूप सन्धि, (vii) पररूप सन्धि, (viii) प्रकृतिभाव/प्रगृह्य सन्धि ।

1. दीर्घ सन्धि – (अकः सवर्णे दीर्घः) यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आए अर्थात् वही वर्ण आये तो दोनों के स्थान में उसी वर्ण का दीर्घ रूप हो जाता है ।

उदाहरण–(1) अ + अ = आ	दैत्य	+ अरिः	= दैत्यारिः	मुर	+ अरिः	= मुरारिः
(2) अ + आ = आ	पुस्तक	+ आलयः	= पुस्तकालयः	हिम	+ आलयः	= हिमालयः
(3) आ + अ = आ	विद्या	+ अर्थी	= विद्यार्थी	तथा	+ अपि	= तथापि
(4) आ + आ = आ	दया	+ आनन्दः	= दयानन्दः	सुधा	+ आकरः	= सुधाकरः
(5) इ + इ = ई	मुनि	+ इन्द्रः	= मुनीन्द्रः	क्षिति	+ इन्द्रः	= क्षितीन्द्रः
(6) इ + ई = ई	गिरि	+ ईशः	= गिरीशः	मुनि	+ ईशः	= मुनीशः
(7) ई + इ = ई	मही	+ इन्दुः	= महीन्दुः	देवी	+ इव	= देवीव
(8) ई + ई = ई	मही	+ ईशः	= महीशः	श्री	+ ईशः	= श्रीशः

(9) उ + उ = ऊ	भानु	+ उदयः	=	भानूदयः	विष्णु	+ उदयः	= विष्णूदयः
(10) उ + ऊ = ऊ	विधु	+ ऊर्ध्वम्	=	विधूर्ध्वम्	मधु	+ ऊर्ध्वम्	= मधूर्ध्वम्
(11) ऊ + उ = ऊ	वधू	+ उत्सवः	=	वधूत्सवः	वधू	+ उपदेशः	= वधूपदेशः
(12) ऊ + ऊ = ऊ	वधू	+ ऊचे	=	वधूचे	भू	+ ऊर्ध्वम्	= भूर्ध्वम्
(13) ऋ + ऋ = ॠ	पितृ	+ ऋणम्	=	पितॄणम्	होतृ	+ ऋकारः	= होतॄकारः

2. गुण सन्धि — (आद् गुणः) — (i) अ अथवा आ के बाद इ अथवा ई आए तो दोनों के स्थान में ए हो जाता है । (ii) अ अथवा आ के बाद उ अथवा ऊ आए तो दोनों के स्थान में ओ हो जाता है । (iii) अ अथवा आ के बाद ऋ अथवा ॠ हो तो दोनों स्थान में 'अर्' हो जाता है । (iv) अ अथवा आ के बाद ऌ हो तो दोनों के स्थान में 'अल्' हो जाता है।

उदाहरण— (1) अ + इ = ए	देव	+ इन्द्रः	=	देवेन्द्रः	उप	+ इन्द्रः	= उपेन्द्रः
(2) अ + ई = ए	परम	+ ईश्वरः	=	परमेश्वरः	सुर	+ ईशः	= सुरेशः
(3) आ + इ = ए	तथा	+ इति	=	तथेति	माता	+ इव	= मातेव
(4) आ + ई = ए	महा	+ ईशः	=	महेशः	उमा	+ ईशः	= उमेशः
(5) अ + उ = ओ	चन्द्र	+ उदयः	=	चन्द्रोदयः	पर	+ उपकारः	= परोपकारः
(6) अ + ऊ = ओ	भग्न	+ ऊरुदण्डः	=	भग्नोरुदण्डः	सुख	+ ऊर्मिः	= सुखोर्मिः
(7) आ + उ = ओ	महा	+ उत्सवः	=	महोत्सवः	गंगा	+ उदकम्	= गंगोदकम्
(8) आ + ऊ = ओ	महा	+ ऊर्जितम्	=	महोर्जितम्	यमुना	+ ऊर्मिः	= यमुनोर्मिः
(9) अ + ऋ = अर्	देव	+ ऋषिः	=	देवर्षिः	वसन्त	+ ऋतुः	= वसन्तर्तुः
(10) आ + ऋ = अर्	महा	+ ऋषिः	=	महर्षिः	महा	+ ऋद्धिः	= महर्द्धिः
(11) अ + ऌ = अल्	तव	+ ऌकारः	=	तवल्कारः	मम	+ ऌकारः	= ममल्कारः

3. वृद्धि सन्धि—(वृद्धिरेचि) (i) यदि अ अथवा आ के बाद ए अथवा ऐ हो तो पूर्ण-पर दोनों के स्थान में ऐ हो जाता है । (ii) यदि अ अथवा आ के बाद ओ अथवा औ हो तो पूर्ण-पर दोनों के स्थान में 'औ' हो जाता है ।

उदाहरण—(1) अ + ए = ऐ	मम	+ एव	=	ममैव	एक	+ एकम्	= एकैकम्
(2) आ + ए = ऐ	तथा	+ एव	=	तथैव	तदा	+ एव	= तदैव
(3) अ + ऐ = ऐ	परम	+ ऐश्वर्यम्	=	परमैश्वर्यम्	जन	+ ऐक्यम्	= जनैक्यम्
(4) आ + ऐ = ऐ	सदा	+ ऐक्यम्	=	सदैक्यम्	महा	+ ऐश्वर्यम्	= महैश्वर्यम्
(5) अ + ओ = औ	तण्डुल	+ ओदनः	=	तण्डुलौदनः	जल	+ ओघः	= जलौघः
(6) आ + ओ = औ	गंगा	+ ओघः	=	गंगौघः	यमुना	+ ओघः	= यमुनौघः
(7) अ + औ = औ	परम	+ औदार्यम्	=	परमौदार्यम्	ईश्वर	+ औदार्यम्	= ईश्वरौदार्यम्
(8) आ + औ = औ	महा	+ औषधम्	=	महौषधम्	सदा	+ औत्सुक्यम्	= सदौत्सुक्यम्

4. यण् सन्धि— (इको यणचि) (i) इ अथवा ई के बाद असमान स्वर आने पर इ अथवा ई का य् हो जाता है । (ii) उ अथवा ऊ के बाद असमान स्वर आने पर उ अथवा ऊ के स्थान में व् हो जाता है । (iii) ऋ के बाद असमान स्वर आने पर ऋ का र् हो जाता है । (iv) ऌ के बाद असमान स्वर आने पर ऌ का ल् हो जाता है ।

उदाहरण—(1) इ + असमान स्वर = य्	प्रति	+ एकम्	=	प्रत्येकम्	इति	+ उक्त्वा	= इत्युक्त्वा
(2) ई + असमान स्वर = य्	सुधी	+ उपास्यः	=	सुध्युपास्यः	नदी	+ अत्र	= नद्यत्र
(3) उ + असमान स्वर = व्	सु	+ आगतम्	=	स्वागतम्	मधु	+ अरिः	= मध्वरिः
(4) ऊ + असमान स्वर = व्	वधू	+ आगमनम्	=	वध्वागमनम्	वधू	+ आदेशः	= वध्वादेशः
(5) ऋ + असमान स्वर = र्	मातृ	+ आदेशः	=	मात्रादेशः	पितृ	+ आज्ञा	= पित्राज्ञा
(6) ऌ + असमान स्वर = ल्	ऌ	+ आकृतिः	=	लाकृतिः			

5. अयादि सन्धि — (एचोऽयवायावः) एच् अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ के बाद यदि कोई स्वर आए तो क्रमशः ए का अय्, ओ का अव्, ऐ का आय् तथा औ का आव् हो जाता है।

उदाहरण—(1) ए + कोई भी स्वर = अय्	हरे	+ ए	= हरये	शे	+ अनम्	= शयनम्
(2) ओ + कोई भी स्वर = अव्	विष्णो	+ ए	= विष्णवे	भानो	+ ए	= भानवे
(3) ऐ + कोई भी स्वर = आय्	नै	+ अक:	= नायक:	गै	+ अक:	= गायक:
(4) औ + कोई भी स्वर = आव्	पौ	+ अक:	= पावक:	धौ	+ अक:	= धावक:

6. पूर्वरूप सन्धि:— पद का अन्तिम वर्ण 'ए' अथवा 'ओ' हो और उसके बाद आने वाला वर्ण 'अ' (केवल ह्रस्व 'अ') हो तो अयादि सन्धि न होकर पूर्वरूप सन्धि होती है । 'अ' पूर्व पद 'ए' या 'ओ' में बिना परिवर्तन मिल जाता है तथा पहचान के लिए ऽ (अवग्रह चिह्न) लगा दिया जाता है । जैसे— सो + अपि = सोऽपि

ए + अ = 'ऽ' (अवग्रह:)	**ओ + अ = 'ऽ' (अवग्रह:)**
के + अपि = केऽपि	सो + अपि = सोऽपि
ते + अत्र = तेऽत्र	को + अपि = कोऽपि

7. पररूप सन्धि:— प्रथम पद अकारान्त उपसर्ग हो तथा बाद में 'ए' अथवा 'ओ' से शुरू होने वाला क्रिया पद हो तो दोनों के स्थान पर क्रम से 'ए' अथवा 'ओ' होता है । जैसे—

प्र + एषणम् = प्रेषणम् प्र + एषयति = प्रेषयति अव + ओषति = अवोषति

8. प्रकृतिभाव/प्रगृह्य सन्धि:— प्रगृह्य संज्ञायुक्त वर्णों के पश्चात् यदि कोई भी स्वर होता है तब सन्धि नहीं होती।

ध्यातव्य—जब द्विवचन के अन्त में इ, उ, ए आदि स्वर होते हैं तब उनकी प्रगृह्य संज्ञा होती है । जैसे—

कवी + इमौ = कवी इमौ लते + एते = लते एते विष्णू + एतौ = विष्णू एतौ

(2) व्यंजन सन्धि या हल् सन्धि

परिभाषा:- यदा व्यञ्जनात् परे व्यञ्जनं स्वर: वा आयाति स: व्यञ्जन सन्धि: कथ्यते । (व्यंजन का किसी व्यंजन के साथ अथवा स्वर के साथ मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन आता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं ।)

निर्देश—व्यंजन सन्धि के अनेक भेद हैं । उनमें से कुछ प्रमुख भेदों का निरूपण यहाँ किया जा रहा है—

(1) अनुस्वार सन्धि: (मोऽनुस्वार:)—यदि पद के अन्त में म् हो और उसके बाद व्यंजन वर्ण हो तो म् का अनुस्वार (ं) हो जाता है । पद के अन्त में यदि म् हो और आगे स्वर आए तो 'म्' स्वर के साथ मिल जाता है, अनुस्वार नहीं होता है ।

उदाहरण— (1) म् + व्यंजन = अनुस्वार

सत्यम्	+ वद	= सत्यंवद	दिवम्	+ गत:	= दिवंगत:	किम्	+ चित्	= किंचित्

(2) म् + स्वर = म

सम्	+ आचार:	= समाचार:	अयम्	+ अपि	= अयमपि	किम्	+ इति	= किमिति

(2) श्चुत्व सन्धि: (स्तो: श्चुना श्चु:) — स् तथा त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के साथ श् और च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) में से कोई वर्ण हो तो स् का श् तथा त् थ् द् ध् न् का क्रमश: च् छ् ज् झ् ञ् हो जाता है ।

उदाहरण—रामस्	+ शेते	= रामश्शेते	सत्	+ चित्	= सच्चित्
सत्	+ जन:	= सज्जन:	उद्	+ ज्वल:	= उज्ज्वल:

(3) ष्टुत्व सन्धि: (ष्टुना ष्टु:) — स् तथा त वर्ग (त् थ् द् ध् न्) के साथ ष् या ट वर्ग— (ट् ठ् ड् ढ् ण्) का योग हो तो स् का ष् तथा त् थ् द् ध् न् का क्रमश: ट् ठ् ड् ढ् ण् हो जाता है ।

उदाहरण—रामस्	+ षष्ठ:	= रामष्षष्ठ:	रामस्	+ टीकते	= रामष्टीकते	कृष्	+ त:	= कृष्ट:
तत्	+ टीका	= तट्टीका	कृष्	+ न:	= कृष्ण:			

(4) जश्त्व सन्धि: (झलां जशोऽन्ते) — पद के अन्त में यदि झल् अर्थात् वर्गों के प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ वर्ण और श् ष् ह् में से कोई हो तथा उसके पश्चात् य व र ह या स्वर हो तो झलों के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है । अर्थात् क् च् ट् त् प् के स्थान में क्रम से ग् ज् ड् द् ब् हो जाता है ।

उदाहरण—दिक्	+ अम्बर:	= दिगम्बर:	जगत्	+ ईश:	= जगदीश:	यत्	+ राघव	= यद्राघव
सत्	+ आचार:	= सदाचार:	अच्	+ अन्त:	= अजन्त:	दिक्	+ जाल	= दिग्जाल
वाक्	+ ईश:	= वागीश:	दिक्	+ अन्त:	= दिगन्त:	वाक्	+ जाल	= वाग्जाल

(3) विसर्ग सन्धिः

परिभाषाः—यदा विसर्गस्य स्थाने किमपि परिवर्तनं भवति तदा सः विसर्ग सन्धिः कथ्यते । (विसर्ग (:) का स्वर वर्ण अथवा व्यञ्जन वर्ण के साथ मेल होने पर जब विसर्ग में कोई विकार (परिवर्तन) होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।)

1. सत्व सन्धिः— विसर्जनीयस्य सः । अर्थात् खरि परे विसर्जनीयस्य सः स्यात् । (यदि विसर्ग के परे (पश्चात्) च्, छ्, ट्, ठ्, त् थ्, श्, ष् अथवा स् वर्णों में से कोई एक वर्ण होता है तो विसर्ग (:) के स्थान पर (त्, थ् आने पर) 'स्', (च्, छ् आने पर) 'श्' तथा (ट्, ठ् आने पर) 'ष्' हो जाता है । इसी को सत्व सन्धि कहते हैं । खर् का अर्थ है वर्गों के पहले दूसरे वर्ण: निः + फल = निष्फल) जैसे–

(i) विष्णुः + त्राताः = विष्णुस्त्राताः (विसर्ग को 'स्' होने पर) (ii) निः + छलः = निश्छलः (विसर्ग को 'श्' होने पर)

(iii) धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः (विसर्ग को 'ष्' होने पर)

2. रुत्व सन्धिः— ससजुषोरुः (i) यदि पद के अन्त में 'स्' या सुजष् हो तो 'स्' के स्थान पर 'रु' हो जाता है । इस 'रु' के 'उ' का लोप होकर केवल 'र्' शेष रहता है ।

(ii) यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' 'आ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और बाद में वर्ग का 3, 4, 5, वर्ण या कोई स्वर वर्ण हो या य्, र्, ल्, ह् हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है। जैसे– (i) कविर् + अयम् = कविरयम् (ii) कविः + गच्छति = कविर्गच्छति (iii) कविः + जयते = कविर्जयते।

3. उत्व सन्धि— अतो रोरप्लुतादप्लुते (i) जब विसर्ग (:) के पहले ह्रस्व 'अ' हो तथा विसर्ग (:) के परे (बाद में) भी ह्रस्व 'अ' स्वर हो तो विसर्ग (:) के बाद भी आने वाले ह्रस्व 'अ' के स्थान पर अवग्रह (ऽ) का चिह्न लगा दिया जाता है जैसे– बालकः + अयम् = बालकोऽयम्।

(ii) यदि विसर्ग (:) के पूर्व (पहले) ह्रस्व 'अ' हो और विसर्ग (:) के आगे किसी भी वर्ग का तीसरा (ग्, ज्, ड्, द्, ब्), चौथा (घ्, झ्, ढ्, ध्, म्,) पाँचवाँ (ङ्, ञ्, ण्, न, म्) अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् इन बीस वर्णों में से कोई भी एक वर्ण हो तो विसर्ग (:) के पूर्व वाले 'अ' तथा विसर्ग (:) दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।

जैसे–बालकः + गच्छति = बालको गच्छति ।

पाठ्यपुस्तकस्य उदाहरणानि

1.	तत्क्षणमेव	= तत्क्षणम्	+ एव।	2.	भृत्याधीनः	= भृत्य	+ आधीनः।
3.	वेदादीनाम्	= वेद	+ आदीनाम्।	4.	नावसीदति	= न	+ अवसीदति।
5.	स्वोदरपूर्तिः	= स्व	+ उदारपूर्तिः	6.	धनमानेस्यामि	= धनम्	+ आनेष्यामि।
7.	अनुग्रहीतोऽस्मि	= अनुगृहीतः	+ अस्मि।	8.	अप्येवम्	= अपि	+ एवम्।
9.	ग्रामं प्रति	= ग्रामम्	+ प्रति।	10.	कार्यार्यन्	= कार्य	+ अर्थम्।
11.	करिस्यत्येषा	= करिष्यति	+ एषा।	12.	किमर्थं	= किम्	+ अर्थम्।
13.	मातेव	= माता	+ इव।	14.	नराधमः	= नर	+ अधमः।
15.	ईश्वेरच्छा	= ईश्वर	+ इच्छा।	16.	गजेन्द्र	= गज	+ इन्द्रः
17.	पितेव	= पिता	+ इव	18.	अतीव	= अति	+ इव।
19.	भाषेयं	= भाषा	+ इयं।	20.	सूक्तयः	= सु	+ उक्तयः।
21.	इत्यादयः	= इति	+ आदयः।	22.	सर्वोत्तमा	= सर्व	+ उत्तमा।

अभ्यासः

प्रश्न 1. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु सम्यग् उत्तरं चित्वा उत्तरस्य क्रमाक्षरः कोष्ठके लिखत–

(निम्नलिखित प्रश्नों में सही उत्तर को चुनकर उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए–)

1. 'नासभ्दिः' इत्यत्र सन्धि विच्छेदं किम्?

(अ) न + असभ्दिः (ब) ना + असभ्दिः (स) ना + सभ्दिः (द) नास + भ्दिः।

2. 'फुल्ल + उत्पलनाम' इत्यत्र सन्धि किम्?

(अ) फुल्ल उत्पलनाम (ब) फुल्लोत्पलनाम (स) फुल्लोनाम (द) फुल्लोपल।

3. 'तत्रैव' इत्यत्र सन्धि विच्छेदं किम्?

(अ) त + त्रैव (ब) तत्रै + व (स) तत्र + एव (द) तत्रे + एव।

4. 'मैवम्' इत्यत्र सन्धि-विच्छेदं किम्?
(अ) मैव + म् (ब) मै + वम् (स) मै + एवम् (द) म + एवम्।

5. 'अत्रैव' इत्यत्र सन्धि-विच्छेदं किम्?
(अ) अत्र + एव (ब) अत्रै + व (स) अ + त्रैव (द) अत्रै + एव।

उत्तराणि— 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (द), 5. (अ)।

प्रश्न 2. निम्नलिखितेषु स्थूलपदेषु सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत—

(निम्नलिखित स्थूल पदों में सन्धि अथवा सन्धि विच्छेद कीजिए—)

1. (i) भवनम् सु + अच्छम् कुरु । (ii) बालकाय मोदकं अति + इव रोचते ।
(iii) वर्षा + ऋतुः रमणीयं भवति ।

2. (i) वसन्त ऋतौ सुगन्धितः पो+अनः वहति । (ii) इयम् नौ + इकस्य तरणिः ।
(iii) मन्दिरे देवि + अस्ति न वा।

3. (i) मम + उपहासम् मा कुरु । (ii) अत्र प्रति + ईक्षाम् कुरु ।
(iii) इदम् पुस्तकम् तु मातृ + अर्थम् नयामि ।

4. (i) धर्मः हि + एकः मोक्षद्वारः। (ii) मृग + इन्द्रता ।
(iii) नित्यम् वृद्ध + उपसेविनः चत्वारिवर्धन्ते ।

5. (i) परमेश्वरः दैत्य + अरिः वर्तते । (ii) छात्र ! एकाम् सु + उक्तिम् लिखति ।
(iii) छात्रेभ्यः अध्ययनं सर्व+उत्तमः अस्ति ।

उत्तर— 1. (i) स्वच्छम् (ii) अतीव (iii) वर्षर्तुः 2. (i) पवनः (ii) नाविकस्य (iii) देव्यस्ति
3. (i) ममोपहासम् (ii) प्रतीक्षाम् (iii) मात्रर्थम् 4. (i) ह्येकः (ii) मृगेन्द्रता (iii) वृद्धोपसेविनः
5. (i) दैत्यारिः (ii) सूक्तिम् (iii) सर्वोत्तमः

प्रश्न 3. अधोलिखितेषु पदेषु सन्धि-विच्छेदं कृत्वा सन्ध्याः नामापि लिखत ।

(निम्नलिखित पदों में सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम भी लिखिए ।)

1. (i) गृहादीनाम् (ii) कदापि 2. (i) तवागमने (ii) सानन्दम् 3. (i) नेच्छति (ii)पानोपयुक्तम्
4. (i) पुस्तकालयः (ii) गणेशोत्सवः 5. (i) शिवाज्युत्सवम् (ii) हतोत्साहानाम् 6. (i) प्राप्त्यर्थम् (ii) अधुनापि
7. (i) तदैव (ii) एकमपि 8. (i) सुखार्थी (ii) यथेष्टम् 9. (i) तस्योपरि (ii) वृहत्तमास्ति
10. (i) विनश्यत्याशु (ii) भारोत्तोलनम्

उत्तर— 1. (i) गृह + आदीनाम् – दीर्घ सन्धिः (ii) कदा + अपि – दीर्घ सन्धिः
2. (i) तव + आगमने – दीर्घ सन्धिः (ii) स + आनन्दम् – दीर्घ सन्धिः
3. (i) न + इच्छति – गुण सन्धिः (ii) पान + उपयुक्तम् – गुण सन्धिः
4. (i) पुस्तक + आलयः – दीर्घ सन्धिः (ii) गणेश + उत्सवम् – गुण सन्धिः
5. (i) शिवाजी + उत्सवम् – यण् सन्धिः (ii) हत + उत्साहानाम् – गुण सन्धिः
6. (i) प्राप्ति + अर्थम् – यण् सन्धिः (ii) अधुना + अपि – दीर्घ सन्धिः
7. (i) तदा + एव – वृद्धि सन्धिः (ii) एकम् + अपि – अनुस्वार सन्धिः
8. (i) सुख + अर्थी – दीर्घ सन्धिः (ii) यथा + इष्टम् – गुण सन्धिः
9. (i) तस्य + उपरि – गुण सन्धिः (ii) वृहत्तमा + अस्ति – दीर्घ सन्धिः
10. (i) विनश्यति + आशु – यण् सन्धिः (ii) भार + उत्तोलनम् – गुण सन्धिः

❑❑